डॉ. गोपाल राजगोपाल

माना हमको याद करेंगे

माना हमको याद करेंगे
लेकिन सबके बाद करेंगे

बिन चाहे अहसान करेंगे
ऐसे भी बरबाद करेंगे

नूर नमक का दिखला कर वो
ज़ख्मों को ही शाद करेंगे

गिरवी रख लेंगे हाथों को
फिर जी भर इमदाद करेंगे

ज़मींदोज़ कर घर को मेरे
ये ज़िद है आबाद करेंगे

सीसा भर देंगे कानों में
लब सीकर संवाद करेंगे

हम मस्ती में चल पड़ते हैं

हम मस्ती में चल पड़ते हैं
उनके माथे बल पड़ते हैं

अपने होते काम समय पर
उनके रस्ते कल पड़ते हैं

सारे निशाँ मिटा देते वो
अपने बिस्तर सल पड़ते हैं

नहीं हुए वो अपने जैसे
एक हमीं जो ढल पड़ते हैं

लम्बी सदियों की राहों में
कुछ अवरोधी पल पड़ते हैं

जो हैं "हार्ड-कापियों" जैसे
लुगदी जैसे गल पड़ते हैं

आचार्य एवं राजभाषा संपर्क अधिकारी, आर.एन.टी.मेडिकल कॉलेज,उदयपुर

 ISSN:2583-8849